सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• डॉ राजलक्ष्मी शिवहरे

सृजक-सृजन-समीक्षा

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे का परिचय

नाम: डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे ।

जन्म: गोन्दिया। महाराष्ट्र ।

जन्मदिन 22-2-1949

पिता- स्व: शशिकुमार गुप्ता

माता- स्व: श्रीमती चन्द्रकला गुप्ता

पति- डॉ आर,एल,शिवहरे ।

शैक्षणिक योग्यता- एम ए, पी एच डी ।हिन्दी साहित्य ।

अन्य विशेषताएँ-

अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित

और पुरूस्कृत।

दिल्ली प्रेस प्रकाशन सरिता से उपन्यास "पाषाण पिघल रहा है" धारावाहिक प्रकाशित।

उपन्यास- दूसरा केनवास पुरस्कृत । कादम्बरी संस्था द्वारा । उपन्यास- साधना हिन्दी लेखिका संघ भोपाल से पुरस्कृत । उपन्यास- गाथा जबलपुर कादम्बरी से परूस्कृत। कहानी संकलन- उत्सर्ग होशंगाबाद की नर्मदा पुरम से पुरूस्कृत। कविता संग्रह- मणि दीप प्रकाशित ।

बच्चों की कहानियाँ चम्पक में प्रकाशित । चिम्पी जी की दुल्हनिया और रहस्यमयी गुफा बाल कहानी संग्रह प्रकाशित । रहस्यमयी गुफा हिन्दी लेखिका संघ द्वारा पुरूस्कृत। रामायण दर्शिका ग्यारहवे रूद्र श्री हनुमानजी प्रकाशित । श्री मद्भागवत के नौ स्कन्द प्रकाशित ।

आत्मकथ्य

मैं पांच भाइयों की सबसे छोटी बहन । पिताजी वकील थे।माता धार्मिक थी।पिता जी ने मुझे लिखना सिखाया । छोटी छोटी बातों को कहानी का रूप देना सिखाया ।

कक्षा दसवीं पास करने के बाद शादी हो गई । पति ईजीनियरीग कालेज में प्रोफेसर । मेरी पढ़ने में रूपी देख इन्होंने मुझे पढाया। आप कुम्हार के चाक के बारे में बता रहीं थी ना वही चाक । पी एच डी तक पढ़ना और साथ साथ में लिखना।आठ उपन्यास लिखना। हिन्दी सलाहकार समिति की संस्कृति मन्त्रालय भारत सरकार की सदस्य रहना। अमेरिका में हिन्दी का आठवें सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने का श्रेय भी इन्हें ही जाता है । लन्दन दुबई में हिन्दी सम्मेलन में भाग लिया ।

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे

"सृजक का सृजन"

भारत माँ के वीर सपूतों

भारत माँ के वीर सपूतों
हमारी भाव भीनी श्रद्धांजलि
हम सो रहे थे मीठी नींद
ओढ दुलाई और तुम
धरती से कई हजार फूट ऊँचे
ठंड में ठिठुरते कांपते
सरहद पर तैनात खड़े
तुमसे कोसो दूर थी नींद
हे सजग प्रहरी-
तुम्हें कोटि कोटि प्रणाम ।
आसमान से उतरी वह
शैतानी ताकत
बनकर बर्फ के गोले
पर जाँबाज ऐसे
सीने पर गोली नहीं
सिर पर गिर रहे थे गोले।
खामोश आकाश ताक
रहा था अब ये क्या करेंगे।
यहाँ आसपास तो कोई
छत नहीं ना धरती माता
का ऑचल।
तुम सो गये मीठी नींद
कभी ना टूटने वाली नींद ।
हम उन शहीदों के जज्बातो
पर कुर्बान होते हैं ।
जो भारत माता के लिए
जीते और मरते हैं ।

मैं हिंदी हूँ

मैं हिन्द की उपासिका
पहचानो मुझे मैं हिंदी हूँ
गिटपिट कर अंग्रेजी नहीं
बन पाओगे।
हिन्दी का अपमान कर
सम्मान नहीं पा जाओगे ।
हिन्दी मातृभाषा है।
इसको अपनाकर
जग में सम्मान पा जाओगे।
भाषा धरोहर संस्कृति की
इससे पहचाने जाओगे।
बोलकर लिखकर
हिन्दुस्तानी कहलाओगे।

माँ

माँ परमेश्वर-
तुम्हारा वह गोद में
लेकर पुचकारना याद आता है ।
तुम्हारी आँखों से बरसता
प्रेम याद आता है।
मां तेरे ऑचल में
छुप जाना याद आता है ।
गलति करने पर जाट
खाना भी याद आता है।
चोट लगने पर सहलाना
याद आता है ।
मेरी सखियो के लिए
चने और मटर लेकर
स्कूल भेजना याद आता है।
अभी भी मा फिजा में
खुशबू तुम्हारी ।
वह खुशबू सूंघ कर
जी डबल जाता है ।
मां - परमेश्वर को देखा नहीं
पर जब भी याद तुम्हारी
आती है वह परमेश्वर
यार आता है।

जिन्दगी के मेले

जिन्दगी के मेले में
दौड़ा भागी की रेल पटेल में
प्रिये मस्ती भरे दिन
कब सरक गये
पता ही नहीं चला।
ना चान्दनी का
लुत्फ उठाया
ना दो पल प्रेम की
फुहार में भीगे।
त न-मन सब अब
थक चले।
बच्चों के घर बार
बसाने में हम
अपने को ही भूले।
आँखों पर चश्मा चढ़ा
कमर भी अब चू चू
करती है।

देखो तो कैसी चर्बी
चढ गई है।
वह बल खाती कमर
जिसकी हर लटका पर
तुम बल खाते थे।
अब उसके लिए झण्डु बाम
लाते हो
प्रिये साथ बिताते पल
याद आते हैं ।
सारे दुख भूल जाती हूँ
जब तुम्हारे हाथों में मेरा
हाथ होता है
जब तुम सो जाते हो
ममत्व उठता है
जो साथ निभाये वह
पति परमेश्वर होता है।

बारिश की फुहार

बारिश की फुहार
अंगिया का भीग कर चिपकना
गोरी का लाज से सिमटना
मेरा जिया चंचल हो जाता है।
उसकी पलकों पर रूकी
बूँदो को पी लेना याद आता है।
आषाढ की वह पहली बरखा।
याद आती है
याद आता है धीरे से
मुझसे लग जाना।
हम नहीं मिले तो क्या
कभी प्रेम मे भीगे थे।
वह बारिश तुम्हें भी
याद होगी ।
याद आते तो मुझे भी
याद कर लेना
कभी साथ भीगी थी हमारे ।

फिर से चोट

घोटालों की आई है बहार
जरा हो जाओ खबरदार
अन्नान हजारे ने लगाई गुहार
कलजुग में कोयला घोटाला
संसद में छिड़गया संग्राम ।
जनता हुई खबरदार।
वह समझ गई हमारी
रोटी छीन अपनी अंटी भरते हैं ।
तन के कपड़े मंहगे होते
भूखे ही सोना होगा
ठंडी राते कैसे कटेगी।।
आम जनता त्रस्त होगी
सरकार के पौ बारह होंगे
सोच समझ कर देना
वोट।
नहीं तो लगेगी
फिर से चोट।

हिमालय की गोद में

हिमालय की गोद में
बसती है भारत की आत्मा ।
हिमालय है गुरू हमें
सिखाया है
सिर उठा कर जीना
वह सिखाया है
शुभ्र धवल रहना
जब सूर्य की प्रथम किरणों से
मैं चमकता हूँ
मेरी तरह तुम भी कम को
बन कर सजग प्रहरी।
हिमालय में बसते है शिव
जो है कल्याण कारी।
जिनकी जटा से बहती
गंगा की निर्मल धारा
आओ हिमालय सा ही
बन जाये हम
शिव बसे मन में हमारे
निर्मल हो मन का हर कोना।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आ. राजलक्ष्मी जी !

सर्वप्रथम तो आपका इस बात के लिए आभार कि आपने देश की सरहदों पर तैनात रक्षकों को इंगित करते हुए कवितायें लिखीं हैं और उनका हाल बयाँ किया है,आपकी तकरीबन सारी रचनाएँ भावुकता से ओत-प्रोत रचनाएँ हैं,किन्तु इनमें सबसे ज़्यादा खटकने वाली बात वर्तनी की बेशुमार गलतियाँ हैं,जिन्हें रचनाकर्म से विलगाया नहीं जा सकता,बहुत सी जगहों पर पंक्तियाँ बिलकुल सपाट हैं,जिनसे रचना में ध्वनित दर्द कमोबेश उस त्वरा से प्रभावित नहीं करता,जिस भाव या अभीष्ट से रचना लिखी गयी होगी । सो मेरी राय में आपको अपने कवित्व और वर्तनी पर विशेष ध्यान देना समीचीन जान पड़ता है । आशा करता हूँ कि एक सोद्देश्य रचनाकर्मी होने के नाते इस नाचीज़ की राय को आप अन्यथा न लेंगी ! थोड़ी कड़ी राय रखता हूँ

वैसे मन का बुरा नहीं मैं , हिन्दी का सम्मान चाहता हूँ,मगर उसके तन का ख्याल भी रखता हूँ|

राजीव थेपरा

2.

आज केंद्रीय पोस्ट पर डॉ राजलक्ष्मी शिवहरे जी, आपके बारे में जाना। बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व है आपका, आपकी शिक्षा व् साहित्यिक सफर सराहनीय है। अमेरिका, लंदन और दुबई में भारत का प्रतिनिधित्व

किया इसके लिए आपको बधाई। आपकी रचनाएँ बेहद सुंदर भाव लिए हैं। मुझे गर्व है कि आपके बारे में मैं जान पाई। शुभकामनाओं के साथ-|

नीरजा मेहता

3.

आज केंद्रीय पोस्ट में आ. प्रीति सुराना जी के माध्यम से सुसाहित्यकारा डॉ० राज लक्ष्मी शिवहरे जी की काव्य यात्रा, उपलब्धियों व उत्तम रचनाओं को आत्मसात करके सुखद अनुभूति हुई,और एक नई ऊर्जा का संचारण मन में हुआ।

एक से एक उत्तम रचनाएँ

1- अति सुंदर शब्दों में उर भाव पिरो कर माँ की वीर सपूतों का यशगान किया।

2- हिंदी और हिन्द प्रेम पर उत्कृष्ट सृजन।

3- माँ की महिमा को सुंदर शब्दों द्वारा नमन किया

4-आज की आपाधापी का सजीव वर्णन किया आपने उत्तम सृजन।

5- बारिश में प्रेम बारिश

6- नेताओं की पोल खोलती सुंदर रचना

7- हिमगिरि की शान में उत्तम सृजन

ऐसे ही उत्तम भावों को शब्दों में पिरो कर हम सब तक पहुँचाने वाली परम् काव्य साधिका को शत शत नमन करता हूँ।

शैलेंद्र सोम

4.

आज केन्दीय पोस्ट में प्रीति सुराना जी ने डा. राजलक्ष्मी शिवहरे जी से कराया मैं स्वयं कहानी से **50** किमी दूर छपारा का निवासी हूँ परन्तु राजलक्ष्मी जी से परिचित नहीं था प्रीति जी का हृदयतल से आभार जिन्होने ऐसी शक्सियत से रूबरू कराया,..

राजलक्ष्मी जी कविता पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इनकी कविताऐं हमारे देश की तस्वींर दिखाती हैं कहीं गामीण जीवन की झलक कहीं देशप्रेम का जज्बा तो कहीं मानवीय रिश्तों की गहराई तक पहुंचने का सफल प्रयास रचनाओं की विविधता मन को छूती प्रतीत होती हैं

देश के वीर जवानों का दोहरा संघर्ष एक ओर शत्रु तो दूसरी ओर प्रकृति का कहर, हमारी हिन्दीभाषा की महत्ता को भी सुन्दर ढंग से चित्रित किया है ।

कृष्ण कुमार सिसोदिया

5.

डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे का प्रदत्त साहित्य

दसवीं से पी एच डी तक का सफ़र साथ ही मातृभूमि से आंग्लभूमि का सफ़र स्वयं में आपकी काबिलियत की दास्तान है ।

भारत माता के प्रति शहीदों की कुर्बानी में देशभक्ति का ज़ज़्बा, मातृभाषा व संस्कृति के प्रति सम्मान, माता को यादकर वत्सल भाव में निमग्न, बारिस में भींगकर अल्हड़ श्रृंगार में वशीभूत होना आपकी बहुमुखी प्रतिभा व माइक्रो टू मैक्रो दृष्टि का परिचायक है ।

शब्दों के चयन में आप भाषायी पूर्वाग्रह से बाहर हैं एवं देशज से लगाव सरसता पैदा करता है । चमत्कार और अलंकरण के बोझ से वंचित रहकर भी भाव की प्रवणता आपको वर्तमान साहित्य - अम्बर के पूनम - चाँद का स्थान सहर्ष सगर्व देता है ।

अवधेश कुमार 'अवध'

6.

बोलकर लिखकर हिंदुस्तानी कहलाओगे ...सही है ...
घोटालो की आई बहार ... सच्चे शब्द
हिमालय की गोद मे ... खूबसूरत रचना .... प्रणाम राजलक्ष्मी जी को,..

तेजराज गहलोत.

7.

डॉ शिवहरे जी की रचनाएं अंतरा पटल पर जगमग हैं।
लेखिका की लेखनी से इक अनोखा काव्यात्मक एव प्रवाही 'भोलापन' प्रगट है लगभग सभी रचनाओं में। आपके पास सामाजिक , सामरिक एवं मानसिक एवं पारिवारिक सरोकारों का सुंदर कैनवास है। सुन्दर चमकीले रंग के शब्द हैं एवं कथ्य तथा शिल्प है। बस आवाश्यक है इतिवृत्तात्मकता से बचना।
बधाई कवियत्री जी तक पहुंचे।

प्रमोद कुमार जैन

8.

आ. राजलक्ष्मी जी की सारी रचनाएँ सुंदर और प्रभावी और उतना ही साफ इनका मन है और सरल स्वभावी भी । लेखनी को नमन,...

रजनी कोठारी जबलपुर

9.

आज केंद्रीय पोस्ट में लेखिका और कवियत्री डॉ. राज लक्ष्मीशिवहरे जी की रचनाओं से रूरू होने का सौभाग्य मिला।-ब-

प्रस्तुत रचनाओं में उनका मूल्यांकन मैं अपने स्तर पर यदि भाव की अपेक्षा से करूँ तो प्रस्तुत रचनाएँ भावुक मन पर गहरा प्रभाव छोड़तीं हैं। वे अपने रचना संसार में जहां शहीदों को नमन करतीं हैं तो वहीं दूसरी और अपनी मातृभूमि, जन्मदात्री माँ, पति परमेश्वर और जीवन से जुड़ीं सुनहरी यादें सभी का चित्रण बड़ी कुशलता से करतीं हैं उनके रचना संसार में गंगा है, हिमालय है, हिन्द है, हिन्दी है,..... साथ ही अपने समय की तात्कालिक स्थितियां भी बखूबी समाहित हैं। उपन्यासकार के रुप में भी मैं उनकी प्रतिभा को नमन करती हूँ। साथ ही वर्तनी की शुद्धता पर विशेष ध्यान देने की प्रार्थना करती हूँ।

मेरी शुभकामनाएं एवम नमन ।

डॉ. प्रीति सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com